The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

# हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का बढ़ता सामरिक महत्व एवं इसके स्त्रातजिक आयाम

**दुर्गा शंकर यादव** (शोध छात्र)

रक्षा एवं स्त्रातजिक अध्ययन विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

**DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17120041**

**ARTICLE DETAILS**

**Research Paper**

**Accepted:** 19-08-2025

**Published:** 10-09-2025

**Keywords:**

*SWOT, EEZ, Unsinkable Aircraft Carrier, ANI, ट्रांशिपमेंट पोर्ट।*

**ABSTRACT**

यह शोध पत्र अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के बढ़ते सामरिक महत्व तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत के उभरते अवसरों का विश्लेषण करता है। वर्तमान समय में भारत का दृष्टिकोण इन द्वीपों के प्रति अधिक विकासोन्मुख और प्रभावशाली हुआ है, चाहे वह ग्रेट निकोबार द्वीप के गैलेथिया बे परियोजना का निर्माण हो, पर्यटन संवर्द्धन हो अथवा सामरिक अवसंरचना का विस्तार हो। यद्यपि हिंद-प्रशांत क्षेत्र लगातार भू-सामरिक दृष्टि से और अधिक प्रासंगिक होता जा रहा है, फिर भी अंडमान-निकोबार द्वीप समूह का आधारभूत ढांचा अभी भी अपूर्ण है। इन द्वीपों की महत्ता पर विचार किया जाए तो इन्हें व्यापक स्तर पर सैन्य एवं असैन्य, दोनों ही दृष्टिकोणों से उपयोग में लाया जा सकता है। वर्तमान तकनीकी युग में भारत के लिए आवश्यक है कि वह अंडमान-निकोबार द्वीप समूह का SWOT (Strengths, Weaknesses, Opportunities, Threats) विश्लेषण करे तथा इसके विभिन्न आयामों को सुदृढ़ बनाने के लिए ठोस कदम उठाए। इससे भारत भविष्य की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से सामना कर सकेगा और अंडमान-निकोबार द्वीप समूह एक “Unsinkable Aircraft Carrier” के रूप में कार्य करता रहेगा।

**प्रस्तावना-** अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह का बढ़ता सामरिक महत्व आज हिंद महासागर और समुद्री राजनीति की दिशा को नए सिरे से प्रभावित कर रहा है। बंगाल की खाड़ी में स्थित यह द्वीपसमूह भारत के लिए सुरक्षा की दृष्टि से अत्यंत आवश्यक है और इसकी लंबी समुद्री सीमाओं को संरक्षित करने में निर्णायक भूमिका निभा सकता है। हाल के वर्षों में भारत ने इन द्वीपों के विकास के लिए सक्रिय नीतियाँ अपनाई हैं और इन्हें एक "न डूबने वाले विमानवाहक पोत" (Unsinkable Aircraft Carrier) के रूप में विकसित किया जा रहा है, जो हिंद महासागर में नियंत्रण स्थापित करने और शक्ति प्रदर्शन का सशक्त साधन सिद्ध हो रहा है।

भौगोलिक स्थिति की दृष्टि से भी इन द्वीपों का विशेष महत्व है, क्योंकि यह दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों–म्यांमार, थाईलैंड और इंडोनेशिया–के समीप स्थित हैं तथा विश्व के सबसे व्यस्त समुद्री मार्गों में से एक मलक्का जलडमरूमध्य के निकट अवस्थित हैं। यह जलडमरूमध्य वैश्विक व्यापार एवं ऊर्जा आपूर्ति की धुरी है, जहाँ से विश्व के लगभग 40% समुद्री व्यापारिक जहाज गुजरते हैं। ऐतिहासिक रूप से भी अंडमान-निकोबार द्वीप समूह ने औपनिवेशिक काल और द्वितीय विश्व युद्ध में महत्वपूर्ण सामरिक भूमिका निभाई थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यद्यपि इन्हें अपेक्षाकृत उपेक्षित रखा गया, किन्तु 21वीं सदी में बदलते भू-राजनीतिक परिदृश्य, विशेष रूप से चीन के बढ़ते प्रभाव और इंडो-पैसिफिक क्षेत्र में रणनीतिक प्रतिस्पर्धा के कारण, इनका महत्व तीव्र गति से बढ़ा है। यही कारण है कि भारत सरकार ने हाल के वर्षों में सैन्य, समुद्री तथा आधारभूत संरचना के विकास पर विशेष बल देना आरंभ किया है।

वर्तमान में हिन्द-प्रशांत क्षेत्र वैश्विक राजनीति, सुरक्षा और अर्थव्यवस्था का केंद्र बिंदु बन चुका है, जहाँ शक्ति संतुलन, समुद्री मार्गों की सुरक्षा, प्राकृतिक संसाधनों की उपलब्धता और सामरिक हित जैसे मुद्दे प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।

अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह अपनी विशिष्ट सामरिक स्थिति के कारण भारत के समुद्री सुरक्षा में बढ़त प्रदान करने के साथ-साथ क्षेत्रीय सहयोग, मानवीय सहायता, आपदा प्रबंधन और समुद्री कूटनीति को भी सुदृढ़ बनाते हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से इन द्वीपों का उल्लेख प्राचीन भारतीय, बर्मी और इंडोनेशियाई स्रोतों में मिलता है। औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश शासन ने इन्हें 'दंड कारावास' के रूप में प्रयोग किया, जहाँ अनेक स्वतंत्रता सेनानियों को कैद रखा गया। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जापानी अधिग्रहण ने भी इन द्वीपों के सामरिक महत्व को और अधिक रेखांकित किया। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत सरकार ने 1956 में इन्हें केंद्र शासित प्रदेश का दर्जा प्रदान किया। हाल के दशकों में बदलती भू-राजनीतिक परिस्थितियों और क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों ने इन द्वीपों की सामरिक प्रासंगिकता को और अधिक बढ़ा दिया है।

यह द्वीपसमूह न केवल भारत की समुद्री सीमाओं की रक्षा में प्रमुख भूमिका निभाता है, बल्कि दक्षिण-पूर्व एशिया और हिंद महासागर क्षेत्र में भारत की रणनीतिक उपस्थिति को भी सुदृढ़ करता है। के. एम. पन्निकर ने अपनी पुस्तक India and the Indian Ocean *(1945)* में स्पष्ट किया था कि अंडमान-निकोबार द्वीप समूह का नियंत्रण भारत को ऐसा सामरिक लाभ प्रदान करता है, जिसे यदि किसी शक्ति के साथ संगठित रूप से प्रयोग किया जाए तो बंगाल की खाड़ी को एक सुरक्षित सामरिक क्षेत्र में बदला जा सकता है।

भारत की सुरक्षा के संदर्भ में पन्निकर का यह मत महत्वपूर्ण है कि भारत की सामरिक शक्ति हिंद महासागर पर उसकी पकड़ पर निर्भर करती है। यदि भारत प्रभावी और सुविचारित नौसैनिक शक्ति से वंचित रहता है, तो वह वैश्विक स्तर पर कमजोर स्थिति में होगा और उसकी स्वतंत्रता उन शक्तियों पर आश्रित हो जाएगी जो हिंद महासागर पर नियंत्रण स्थापित करने में सक्षम हैं। इस परिप्रेक्ष्य में अंडमान-निकोबार द्वीप समूह भारतीय मुख्यभूमि की सुदूरवर्ती अग्रिम भुजा की तरह है, जो पारंपरिक खतरों के विरुद्ध रक्षा की प्रथम पंक्ति के रूप में कार्य करता है तथा सामरिक रूप से 'स्प्रिंगबर्ड' की भांति उपयोग में लाया जा सकता है।

**अंडमान निकोबार द्वीप समूह का भौगोलिक विस्तार एवं स्त्रातजिक महत्व-**

शीत युद्ध की समाप्ति और वैश्वीकरण के प्रभाव से अंतरराष्ट्रीय राजनीति एवं सुरक्षा परिवेश में व्यापक परिवर्तन आए। इस बदलती स्थिति में भारत ने अपनी "लुक ईस्ट नीति" के तहत अंडमान और निकोबार कमान (ANC) को रणनीतिक दृष्टि से सुदृढ़ किया, जो भारत की समुद्री शक्ति और क्षेत्रीय प्रभाव को प्रदर्शित करता है। वर्तमान समय को "एशिया का युग" और "महासागरों का समय" माना जा रहा है, ऐसे में ANI का महत्व और भी बढ़ जाता है।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह बंगाल की खाड़ी और अंडमान सागर के संगम क्षेत्र में फैला एक महत्वपूर्ण द्वीपसमूह है, जिसमें लगभग 572 द्वीप शामिल हैं, जिनमें से केवल कुछ पर ही स्थायी जनसंख्या निवास करती है। इसका कुल क्षेत्रफल लगभग 8,249 वर्ग किमी है, जिसमें अंडमान (6,408 वर्ग किमी) और निकोबार (1,841 वर्ग किमी) द्वीप मुख्य भाग हैं। दोनों के बीच 150 किमी चौड़ा 'टेन डिग्री चैनल' इन्हें विभाजित करता है। ये द्वीप भारत की मुख्यभूमि से लगभग 1,200 किमी दूर हैं, जबकि इंडोनेशिया, म्यांमार और थाईलैंड के बहुत नजदीक स्थित हैं। इसका सबसे दक्षिणी बिंदु 'इंदिरा प्वाइंट' भारत का सबसे दक्षिणी भूभाग भी है।

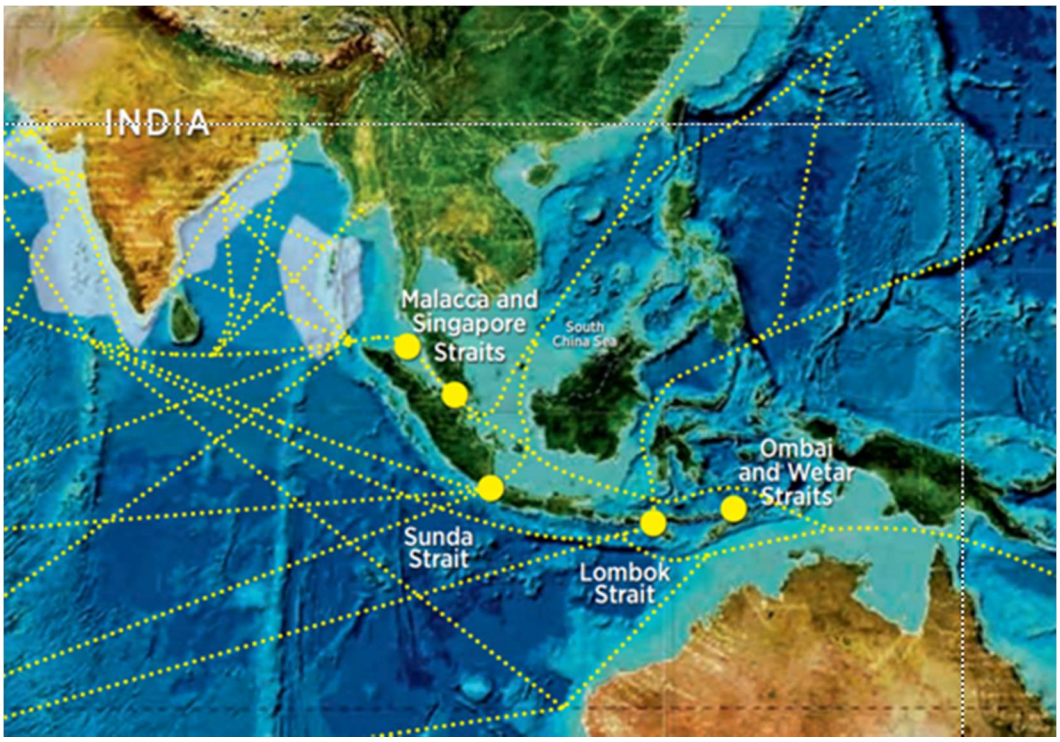


*Image credit-NMF, New Delhi*

भूगोल की दृष्टि से यह द्वीपसमूह हिमालयी पर्वतमाला की निरंतरता माने जाने वाले अराकान योमा पर्वत का हिस्सा है और अपनी प्राकृतिक सुंदरता के लिए प्रसिद्ध है। इसे तीन जिलों–उत्तर व मध्य अंडमान, दक्षिण अंडमान और निकोबार–में विभाजित किया गया है, जबकि राजधानी पोर्ट ब्लेयर वर्तमान में श्री विजयपुरम है। रणनीतिक दृष्टि से अंडमान और निकोबार द्वीप समूह का महत्व तेजी से बढ़ा है। बंगाल की खाड़ी में इनका स्थान भारत को हिंद महासागर क्षेत्र में सामरिक बढ़त प्रदान करता है। यही कारण है कि भारत इन द्वीपों को एक "न डूबने वाला विमानवाहक पोत" के रूप में विकसित कर रहा है, ताकि हिंद महासागर की निगरानी, क्षेत्रीय सुरक्षा और शक्ति संतुलन में निर्णायक भूमिका निभाई जा सके।

**हिन्द-प्रशांत क्षेत्र में अण्डमान निकोबार द्वीप समूह का बढ़ता सामरिक महत्व एवं इसके स्त्रातजिक आयाम-**

वर्तमान समय में विश्व का सबसे संवेदनशील भाग हिंद-प्रशांत क्षेत्र बना हुआ है आगे के समय में भी इस क्षेत्र के मुख्य प्रतिद्वंद्वी चीन आमने-सामने रहेंगे क्योंकि चीन ने अपनी विस्तारवादी नीतियों की घोषणा कर रखी है ऐसे में सबसे अधिक खतरा या रणनीतिक चुनौती भारत के सम्मुख है पीछे के वर्षों में 2020 के पश्चात् भी देखा गया है जब-जब अमेरिकी गुट ने चीन के प्रति रणनीतिक दबाव बनाया

तब तब चीन ने उसको कम करने के लिए भारत की क्षेत्रीय सीमा की तरफ अपनी रणनीतिक कार्यवाहियों को बढ़ाया। चीन की गतिविधियों और अमेरिका की कमजोरियों का विश्लेषण किया जाए तो 1945 से लेकर आज तक अमेरिका ने किसी भी शक्तिशाली देश के विरुद्ध सीधी सैन्य कार्रवाई नहीं किया इसका तात्पर्य है कि भारत क्वाड  का हिस्सा बनकर इस क्षेत्र में महत्वपूर्ण कदम उठा सकता है रणनीतिक रूप से यह भी देखा गया है कि चीन ने पिछले 10 सालों में दक्षिण एशिया के सभी देशों में अपनी जगह बनाकर भारत को घेर सा लिया है ऐसे में इस खेलों के विरुद्ध सफलतापूर्वक रणनीतिक कार्यवाही अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के द्वारा किया जा सकता है।

वैश्वीकरण की लहर और शीत युद्ध के बाद के अंतरराष्ट्रीय संबंधों के परिणामस्वरूप भू-रणनीतिक और सुरक्षा परिवेश में बड़े बदलाव आए हैं। इस बदलते परिदृश्य में, भारत की "लुक ईस्ट नीति" के अंतर्गत अंडमान और निकोबार कमान (ANC) का महत्व भारत की रणनीतिक महत्वाकांक्षाओं को दर्शाता है। यह कमान भारत की समुद्री साख को सुरक्षित करने और अपने आस-पास के भू-रणनीतिक क्षेत्र में निर्णायक भूमिका निभाने की दिशा में एक झलक प्रदान करती है। आज का युग "एशिया का युग" और "महासागरों का समय" माना जा रहा है, ऐसे में अंडमान और निकोबार कमान का भू-राजनीतिक महत्व नकारा नहीं जा सकता।

भू-रणनीतिक रूप से ये द्वीपसमूह भारतीय भूभाग से लगभग 1,500 किलोमीटर दूर स्थित हैं और भारत को हिंद-प्रशांत क्षेत्र तक पहुँचने में मदद करते हैं। इन द्वीपों का महत्व उस समय और भी अधिक स्पष्ट हुआ जब अक्टूबर 2001 में भारत के रक्षा मंत्रालय ने यहाँ एकमात्र एकीकृत संयुक्त कमान की स्थापना की। नेवी प्रमुख एडमिरल आर. के. धवन ने अपनी वार्षिक प्रेस वार्ता में कहा था– "अंडमान और निकोबार द्वीप समूह बहुत ही रणनीतिक रूप से स्थित हैं। ये पूरे समुद्री संपर्क मार्गों और चोक पॉइंट्स (Indian Ocean Region में) पर नजर रखते हैं। मलक्का जलडमरूमध्य के निकट होने के कारण इन द्वीपों की रणनीतिक महत्ता बहुत बढ़ जाती है क्योंकि यह क्षेत्र की निगरानी और नियंत्रण के लिए बहुत उपयुक्त है।"

इस कथन से स्पष्ट होता है कि अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत के विस्तारित हाथों के रूप में उसके सुरक्षा हितों का अभिन्न हिस्सा हैं। ये द्वीप मुख्य भारत भूमि से दूर, बंगाल की खाड़ी के दक्षिणी भाग में स्थित हैं। उत्तर में ये द्वीप म्यांमार (बर्मा) से मात्र 22 नॉटिकल मील की दूरी पर हैं और दक्षिण में सबसे दक्षिणी बिंदु (इंदिरा पॉइंट) से इंडोनेशिया मात्र 80 नॉटिकल मील की दूरी पर है।

1999 के कारगिल संघर्ष के बाद, कारगिल समीक्षा समिति की सिफारिशों के आधार पर मंत्रियों के समूह ने मई 2001 में एकीकृत कमान की स्थापना को मंजूरी दी। इसके फलस्वरूप अक्टूबर 2001 में अंडमान और निकोबार कमान का गठन किया गया। इस कमान की स्थापना का मुख्य उद्देश्य थलसेना, नौसेना, वायुसेना और तटरक्षक बल के बीच सामंजस्य स्थापित कर इन द्वीपों के विशिष्ट संचालन वातावरण में संयुक्त परिचालन को सक्षम बनाना था।

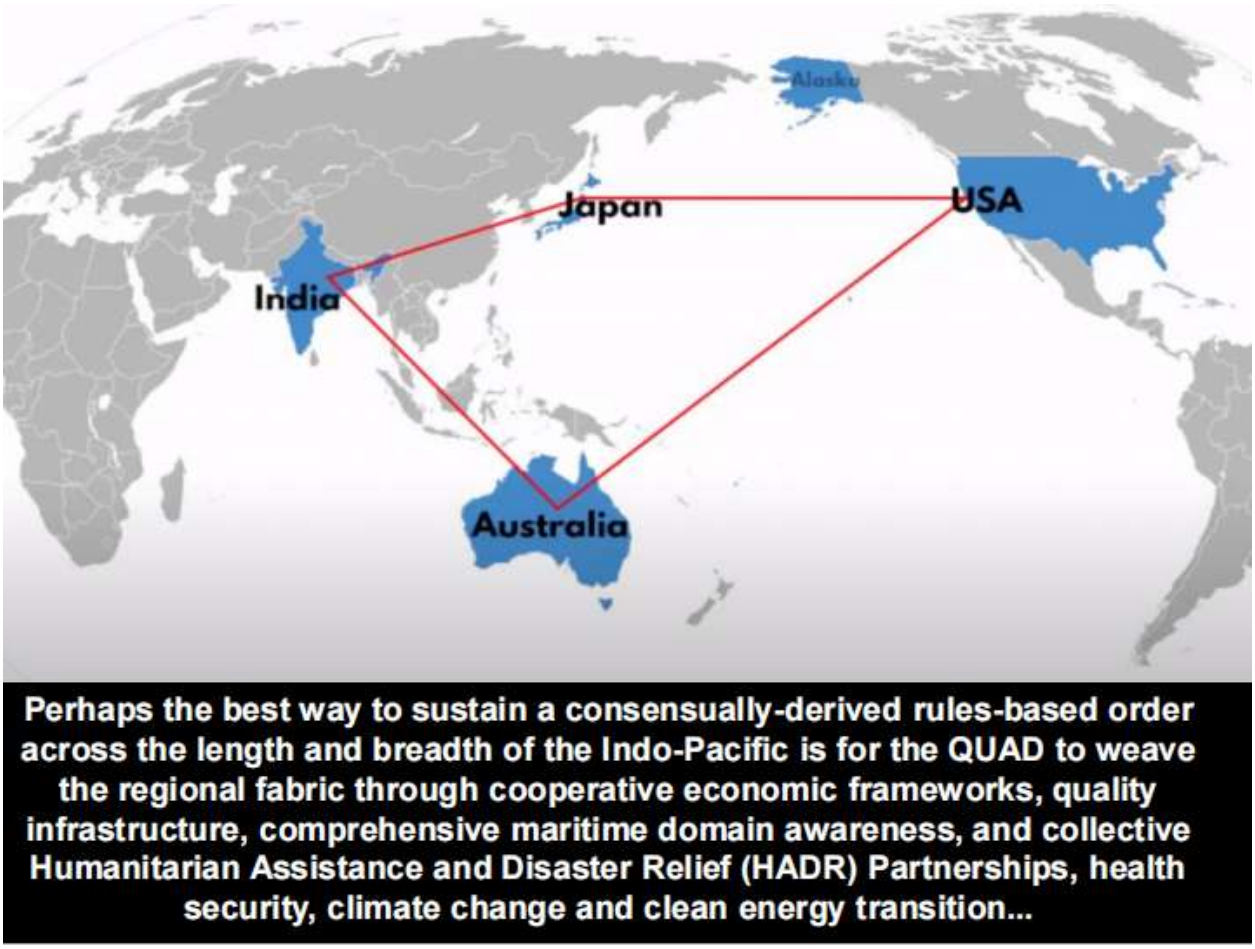


भारत की सबसे बड़ी चिंता चीन की हिंद महासागर में बढ़ती भागीदारी और दक्षिण एशियाई नौसैनिक क्षेत्रों में हो रहे विकास कार्य हैं। मलक्का जलडमरूमध्य जैसे प्रमुख चोक पॉइंट के पास इन द्वीपों की स्थिति इस क्षेत्र की नौसैनिक रणनीति को पूरी तरह बदल सकती है। हालाँकि इन द्वीपों को रणनीतिक लाभ प्राप्त करने और आक्रामक क्षमताओं के केंद्र के रूप में देखा जाता है, लेकिन इनका असली लाभ भारत की समुद्री आर्थिक शक्ति, जागरूकता और नौसैनिक बढ़त को विस्तार देने में है, जैसा कि चीन, दक्षिण चीन सागर में कर रहा है। भारत को इन द्वीपों को अपनी राष्ट्रीय रणनीति में शामिल करते हुए एक स्पष्ट नीति बनानी चाहिए। साथ ही, उसे अपने सहयोगी देशों की क्षमताओं का भी उपयोग करना

चाहिए ताकि इन द्वीपों की अवसंरचनात्मक पिछड़ापन दूर किया जा सके। भारत ने अतीत में अपने समुद्री हितों को नजरअंदाज किया है, परंतु अब यह अवसर है कि वह अपने लंबे समुद्र तट, आर्थिक क्षमताओं और सैन्य शक्ति का उपयोग कर क्षेत्रीय नेतृत्व स्थापित करे।

ये नौसैनिक विकास भारत को चीन जैसी उभरती और हावी होती शक्ति को अपने पड़ोस में संतुलित करने और रोकने की दिशा में मदद करेंगे। भारत, जो हर आयाम में महाशक्ति बनने का सपना देख रहा है, अपनी समुद्री क्षमता को मजबूत कर हिंद महासागर में प्रभाव बढ़ाने की तैयारी कर रहा है। इतिहास यह बताता है कि महाशक्ति बनने के लिए एक शर्त यह भी है कि संबंधित देश क्षेत्र में नौसैनिक श्रेष्ठता प्राप्त करे।

इतिहास, भू-राजनीति, सैन्य दृष्टिकोण, आर्थिक प्रभाव और विदेश नीति के संदर्भ में ANI की भूमिका बहुआयामी रही है। ऐतिहासिक रूप से, इन द्वीपों ने उपनिवेशी शासन से लेकर द्वितीय विश्व युद्ध, स्वतंत्रता संग्राम और आज़ाद हिंद सरकार की स्थापना तक एक केंद्रीय भूमिका निभाई। भू-रणनीतिक रूप से यह क्षेत्र भारत को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में पहुँच प्रदान करता है और "लुक ईस्ट" से लेकर "एक्ट ईस्ट" नीति तक इसका महत्व लगातार बढ़ता गया है।

आज, जब वैश्विक शक्तियाँ हिंद-प्रशांत क्षेत्र में प्रभुत्व स्थापित करने के लिए सक्रिय हैं, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह भारत को एक ऐसा मंच प्रदान करते हैं जहाँ से वह सुरक्षा, व्यापार, राजनयिक सहयोग और शक्ति संतुलन को नियंत्रित कर सकता है। यह द्वीपसमूह भारत की समुद्री सुरक्षा के लिए एक प्राकृतिक प्रहरी के रूप में कार्य करता है। अंडमान और निकोबार कमांड (ANC) के तहत त्रि-सेवा सैन्य समन्वय की स्थापना ने इन द्वीपों को भारत की रक्षा नीति में एक महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है।

आज भारत SIMBEX, MILAN और मालाबार जैसे बहुपक्षीय समुद्री अभ्यासों के माध्यम से न केवल अपने रक्षा साझेदारों के साथ संबंध मज़बूत कर रहा है, बल्कि एक अग्रणी क्षेत्रीय शक्ति के रूप में अपनी स्थिति को भी परिभाषित कर रहा है। क्वाड (QUAD) के सामरिक दृष्टिकोण में ANI को समुद्री तंत्र की रीढ़ माना जा रहा है। अमेरिका, जापान और ऑस्ट्रेलिया के साथ बढ़ता समुद्री सहयोग इस द्वीपसमूह को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा के केंद्र बिंदु के रूप में स्थापित कर रहा है।

आर्थिक दृष्टिकोण से, ANI भारत की “ब्लू इकोनॉमी” को गति देने के लिए एक रणनीतिक मंच प्रदान करता हैं। इन द्वीपों के माध्यम से समुद्री व्यापार, पर्यटन, मत्स्य पालन, जल परिवहन और सागर आधारित संसाधनों के दोहन की संभावनाएँ अत्यधिक व्यापक हैं। बंदरगाहों, रनवे, जल-मार्ग संपर्क और

इंटरनेट केबल जैसी आधारभूत सुविधाओं में किया गया निवेश न केवल स्थानीय विकास को गति देता है, बल्कि क्षेत्रीय एकीकरण की नींव भी रखता है। साथ ही, इन द्वीपों की संवेदनशील पारिस्थितिकी, जैव विविधता और समुद्री पर्यावरण को देखते हुए भारत को विकास और संरक्षण के बीच संतुलन साधने की चुनौती भी है। एक ओर इन द्वीपों का सैन्यीकरण और अवसंरचना विकास आवश्यक है, वहीं दूसरी ओर पर्यावरणीय सुरक्षा और स्थायित्व भी उतना ही अनिवार्य है। भारत को अपनी रणनीति में "ग्रीन स्ट्रैटेजिक ज़ोन" की अवधारणा को शामिल करना चाहिए।

अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की सामरिक महत्ता विशेषकर तब और बढ़ जाती है जब हम चीन की बेल्ट एंड रोड इनिशिएटिव (BRI), स्ट्रिंग ऑफ पर्ल्स रणनीति और दक्षिण चीन सागर में बढ़ती सैन्य गतिविधियों को देखते हैं। ऐसे में अंडमान और निकोबार भारत को एक "डेटरेंस बेस" प्रदान करते हैं–जहाँ से वह चीन की समुद्री गतिविधियों पर निगरानी रख सकता है, और आवश्यकता पड़ने पर निर्णायक कार्यवाही भी कर सकता है। भारत को इस रणनीतिक लाभ का संपूर्ण उपयोग करते हुए क्षेत्रीय ताकतों के साथ सहयोग, अवसंरचना विकास और सैन्य उपस्थिति को और बढ़ाना होगा।

"भारत की सुरक्षा परिधि पश्चिम में फारस की खाड़ी से लेकर पूर्व में मलक्का जलडमरूमध्य तक फैली हुई है, जिसमें मध्य एशिया, अफगानिस्तान, चीन और दक्षिण-पूर्व एशिया शामिल हैं।" यह व्यापक दृष्टिकोण भारत की बढ़ती स्त्रातजिक स्थिति और इस क्षेत्र की सुरक्षा संरचना को आकार देने में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को दर्शाता है।

अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह, जो बंगाल की खाड़ी के भीतर स्थित है, भारत के कुल भूमि क्षेत्र का केवल 0.2 प्रतिशत होने के बावजूद, भारत की रणनीतिक सोच में अत्यधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये द्वीप भारत के लगभग 30 प्रतिशत विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) को घेरते हैं, जो लगभग 6 लाख वर्ग किलोमीटर है। ये द्वीप मलक्का जलडमरूमध्य के मुहाने के पास स्थित हैं, जिसे 'फनल एरिया' कहा जाता है। यह भौगोलिक लाभ भारत को दो महत्वपूर्ण जलमार्गों - मलक्का जलडमरूमध्य के पश्चिम में सिक्स डिग्री चैनल और उत्तर में टेन डिग्री चैनल - पर समुद्री डोमेन जागरूकता (MDA) बढ़ाने में मदद करता है। अधिकांश वैश्विक कंटेनर यातायात पहले चैनल से होकर गुजरता है, जबकि दूसरे चैनल का उपयोग अपेक्षाकृत कम जहाजों द्वारा बंगाल की खाड़ी के तटीय देशों की ओर किया जाता है।

**निष्कर्ष एवं सुझाव-** अंडमान और निकोबार द्वीप समूह केवल भारत की सुरक्षा के लिए ही नहीं, बल्कि उसकी क्षेत्रीय और वैश्विक पहचान को गढ़ने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। भारत ने SAGAR,

BIMSTEC, IPOI और IORA जैसी बहुपक्षीय पहलों के माध्यम से इस क्षेत्र को सहयोग, स्थिरता और साझा समृद्धि का केंद्र बनाने का प्रयास किया है। इन पहलों में ANI की सक्रियता भारत की 'नेट सिक्योरिटी प्रोवाइडर' की भूमिका को और अधिक सशक्त बनाती है।

रणनीतिक दृष्टि से ANI भारत की रक्षा नीति, सैन्य शक्ति, कूटनीतिक सक्रियता और क्षेत्रीय नेतृत्व का आधार बन चुका है। यह हिंद-प्रशांत क्षेत्र में भारत की निर्णायक उपस्थिति को सुनिश्चित करता है। इसके लिए भारत को आवश्यक है कि ANI को अपनी रक्षा, विदेश नीति और आर्थिक विकास के प्रमुख स्तंभ के रूप में देखते हुए बहुआयामी निवेश और योजनाओं को लागू करे। यही भारत को एक समुद्री महाशक्ति के रूप में स्थापित करेगा और वैश्विक भू-राजनीतिक संतुलन में उसकी भूमिका को मज़बूत बनाएगा।

हालाँकि स्वतंत्रता के 78 वर्ष बाद भी इन द्वीपों का अपेक्षित विकास अधूरा है। इनकी सामरिक और आर्थिक क्षमता को देखते हुए सरकार को इनके विकास पर विशेष ध्यान देना चाहिए। ANI भारत की मुख्य भूमि से 700 नॉटिकल मील दूर स्थित है और यह भारत के विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) में लगभग तीन लाख वर्ग किलोमीटर जोड़ता है। यहाँ हाइड्रोकार्बन, खनिज और पर्यटन की अपार संभावनाएँ हैं, जो ब्लू इकोनॉमी को गति प्रदान कर सकती हैं।

साथ ही, ANI की भौगोलिक स्थिति इसे दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों से जोड़ती है। इसलिए सिंगापुर और मलेशिया की तर्ज पर यहाँ स्मोकलेस इंडस्ट्री तथा प्रदूषण-रहित औद्योगिक ढांचे विकसित किए जा सकते हैं। इससे स्थानीय आबादी का आर्थिक विकास होगा और क्षेत्रीय व्यापार में भी वृद्धि होगी।

वर्तमान समय में चीन अपनी विस्तारवादी नीतियों के चलते हिंद महासागर क्षेत्र में सक्रिय है और उसकी निगरानी गतिविधियाँ भारत के लिए गंभीर चुनौती हैं। इसलिए ANI का रणनीतिक सुदृढ़ीकरण और आधुनिक ढांचागत विकास अत्यंत आवश्यक है। विशेष रूप से समुद्री साइबर सुरक्षा और निगरानी व्यवस्था को मज़बूत कर भारत भविष्य की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम बन सकता है।

क्वाड की गतिविधियाँ और ऑस्ट्रेलिया द्वारा परमाणु पनडुब्बी क्षमता का विकास इस बात की ओर संकेत करते हैं कि भारत को भी बंगाल की खाड़ी और हिंद महासागर में अपनी परमाणु क्षमता और नौसैनिक प्रभुत्व बनाए रखना होगा। ANI इस दिशा में भारत के लिए पूर्वी समुद्री सीमा का 'सुरक्षात्मक प्रहरी' है, जो पूर्वी एशिया से उत्पन्न खतरों का सामना करने की क्षमता रखता है। यदि ANI का विकास योजनाबद्ध तरीके से किया जाए- जैसे पर्यटन का विस्तार, पोर्ट इंफ्रास्ट्रक्चर का आधुनिकीकरण,

स्मोकलेस इंडस्ट्री का प्रोत्साहन तो यह भारत की ब्लू इकोनॉमी को नई गति देगा और क्षेत्रीय सामरिक संतुलन में भारत की स्थिति को और अधिक मज़बूत करेगा।

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-**


1. Brewster, D. (2014). *India's Ocean: The story of India's bid for regional leadership*. Routledge.
2. Indian Navy. (2015). *Ensuring secure seas: Indian maritime security strategy*. New Delhi: Integrated Headquarters, Ministry of Defence (Navy).
3. Ministry of External Affairs (MEA). (2015). *India's vision for the Indo-Pacific region: SAGAR – Security and Growth for All in the Region*. Government of India.
4. Pant, H. V., & Bommakanti, K. (2019). India's policy on the Indo-Pacific: Evolving regional architecture. *International Affairs, 95*(5), 1139–1157.
5. Scott, D. (2019). India in the Indo-Pacific: New Delhi's 'look east–act east' policy, strategic positioning and the Andaman Nicobar Islands. *Journal of Asian Security and International Affairs, 6*(2), 151–172.
6. Ministry of Home Affairs. (2021). *Andaman & Nicobar Islands: Strategic importance and developmental policies*. Government of India.
7. Chaudhury, D. R. (2019). *India's Look East Policy and Maritime Strategy: Strategic Role of Andaman and Nicobar Islands*. New Delhi: Routledge.
8. भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय। (2020). *भारत की समुद्री सुरक्षा और अंडमान-निकोबार कमान*. नई दिल्ली: भारत सरकार प्रकाशन विभाग।
9. Agnihotri, K. K. (2025). *The Andaman and Nicobar Islands: Eastern sentinel of India's maritime security*.